शोध छात्र
एस0एस0जे0 कैम्पस, अल्मोड़ा
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

सहायक प्राध्यापिका
एस0एस0जे0 कैम्पस, अल्मोड़ा
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

सारांश जनजाति विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का एक अध्ययन

गोपाल सिंह **डॉ0 रिजवाना सिद्दकी**

—प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य उत्तराखण्ड के उधमसिंहनगर जिलेमें अध्ययनरत जनजाति विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का पता लगाना था। अध्ययन के उद्देश्योंको ध्यानमें रखते हुये उच्च माध्यमिक स्तरमें अध्ययनरत 300 जनजाति विद्यार्थियों का चुनाव सरल या द्वच्छिकविधि; लॉटरीविधिद्ध से किया गया है।आंकड़ोंको एकत्र करने के लिये भार्गव एवं शाह द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापने का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्षोंमें यह पाया गया कि जनजाति विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में काफी अंतर है।

मुख्य शब्द—जनजाति विद्यार्थी, आकांक्षा स्तर।

प्रस्तावना—

भारतका सम्पन्न प्रभुत्व गणराज्य के रूपमे जाना जाता है। भारत सम्पन्न प्रभुत्व गणराज्य वाला देश होने के बादभी इसमें विविधताएं दिखाई देती है। भारतमें कई धर्म, मत, सम्प्रदाय प्रजाती, जाति एवं जनजाति के लोग रहते हैं। भारत की सम्पूर्ण जनसंख्या का लगभग 8.08 प्रतिशत भाग अनुसूचित जाति एवं जनजातियों द्वारा निर्मित है। इन जनजातियों का निवास ऐसे भौगोलिक क्षेत्रोंमे दिखाई देता है जो काफी देर से विकसित होती हुइ दिखाई देती है। भारतमें आज भी बहुतसी जनजातियां ऐसी हैं जा अपना जीवन आदिम स्तरपरही व्यतित करती है। भारतमें जनजातियोंको कई नामों से जाना जाता है जैसे आदिम समाज आदिवासी, वन्य जाति, गिरीजन और अनुसूचित जनजाति आदि। 2011 की जनगणना के अनुसार भारतमे अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या 10.42 करोड़ है।

डा0 रिवर्स के अनुसार – जनजातियों का एक ऐसा सामूहिक समूह जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं तथा युद्व जैसे सामान्य उदेश्योंको प्राप्त करने के लिये एक साथ मिलकर कार्य करते हैं।

चार्ल्स विनिक के अनुसार – जनजातियों का एक ऐसा सामाजिक संगठन जिसमें क्षेत्र, भाषा, सांस्कृतिक समरूपता दिखाई देती है। यह समूहों के साथ उपसमूह जो अपने गोत्रों के साथ गांवमें दिखाई देते हैं।

आकांक्षा स्तर—

वर्तमान समय को विज्ञान एंव तकनिकी के युग के नाम से जाना जाता है, जिसमें विभिन्न प्रकार के तकनिकी एवं उद्योगोंको प्राथमिकता प्रदान की गयी है। मनुष्य अपनी आजिविकाको चलाने के लिये इन्ही तकनिकी साधनों का प्रयोग करता आ रहा है, जिसका व्यक्ति के जीवन से गहरा सम्बन्ध है। व्यक्ति इन्ही साधनों का प्रयोग कर अपने जीवन को सरल तथा बोधगम्य बनाने का प्रयास करता है। वह तबतक प्रयास करता रहता है जबतक कि सफल नही हो जाता। असफल होनेपर व्यक्ति दोगुना उत्साह के साथ उस कार्यको करना प्रारम्भ कर देता है और सफल हो जाता है। यहि सफलता और असफलता व्यक्ति के आकांक्षा स्तरको प्रभावित करता है।

सफलता और असफलता व्यक्तिको अपने लक्ष्य तक पहुँचाने पूर्ण रूप से मद्द करती है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करना व्यक्ति की इच्छा, अभिलाषा या आकांक्षा कहलाती है। किसी व्यक्तिमें लक्ष्य प्राप्त करने की तीव्रता जितनी अधिक होगी, उसकी आकांक्षाए भी उतनीही अधिक होंगी। आकांक्षा स्तर से व्यक्ति

का जीवन प्रभावित होता है। बिनाआकांक्षा या इच्छा रखनेवाला व्यक्ति, सफलताको प्राप्त करनेमें असफल रहता है। व्यक्ति की सफलता के कुछ तात्कालिक लक्ष्य होते हैं, जिनको प्राप्त करना व्यक्ति के लिये उसी समय आवश्यक होता है। यह तात्कालिक लक्ष्य व्यक्ति की आकांक्षा पर ही निर्भर करती है। अगर इन आकांक्षाओंको प्राप्त करनेंमें देरी होती है तो उस आकांक्षा का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता है। एक ऐसा व्यक्ति जिसकी कोई आकांक्षा न हो वह उस जहाज की तरह होती है जिसे समुद्र की लहरें जहॉ चाहें वहॉ लेकर चली जाती हैं। ऐसे व्यक्तिको किसी प्रकार का कोई ज्ञान नही होता है। इसलिए किसी व्यक्तिमें आकांक्षा का होना बहुत जरूरी है। ये आकांक्षाए व्यक्ति के जीवन के अलग क्षेत्रोंमें अलग अलग होती हैं, जैसे ये आकांक्षाए किसी व्यवसाय से सम्बन्धित हो सकती हैं या फिर जीवन के अन्य क्षेत्र जैसे खेलकूद, संगीत, कला, साहित्य आदि हो सकते हैं।

जीवन का उज्जवल एवं समृद्धशाली भविष्य आज के किशोरोंमें दिखाई दे रहा है जिसका उत्तरदायित्व शिक्षापरही टिका हुआ है। शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जिसपर देश की उन्नति निर्भर करती है। वर्तमान समय में यह आवश्यक है कि परिवार का प्रत्येक सदस्य धन कमानेमें सहयोग दे। यह तभी संभव है जब बालकको किशोरावस्था से ही उनकी रूचि, आकांक्षा और उनकी मानसिक क्षमता के अनुसार सही मार्गदर्शन दिया जाये।

समस्या कथन – जनजाति विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का एक अध्ययन ।

उद्देश्य–1–जनजाति विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

2–विज्ञानवर्ग एवं कलावर्ग के जनजाति विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना–

1–जनजाति विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर समान है।

2–विज्ञानवर्ग एवं कलावर्ग के जनजाति विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर समान है।

शोध प्रारूप–प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत किया गया है–

शोध विधि–प्रस्तुत अध्ययनमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्शविधि–प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तरमें अध्ययनरत जनजाति के तीनसौ विद्यार्थियोंको शामिल किया गया है। न्यादर्शके चुनाव के लिये सरल याद्वच्छिक न्यादर्श; लॉटरी विधिद्ध का प्रयोग किया गया है।

उपकरण–प्रस्तुत अध्ययन में भार्गव एव शाहद्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि–प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर उनका प्रतिशत निकाला गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या–

परिकल्पना 1–जनजाति विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर समान है।

तालिका–1

जनजाति विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का प्रतिशत

आकांक्षा स्तर	उच्च	औसत	निम्न	योग
प्रतिशत	23.30	40	36.67	100
योग; छत्र 300	70	120	110	300

परिणामों की व्याख्या– प्रस्तुत अध्ययन में जनजाति विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर का मापन करने के लिये 300 विद्यार्थियों का चयन कर उनका प्रतिशत निकाला गया है। विश्लेषणसे पता चला है कि 23.30 प्रतिशत जनजाति विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर उच्च, 40 प्रतिशत जनजाति विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर औसत तथा 36.67 प्रतिशत जनजाति विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर निम्न है।

निष्कर्ष–परिणामों से प्राप्त प्रतिशतसे यह पता चला है कि जनजाति विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर समान नही है, क्योंकि जनजाति विद्यार्थियों

का आकांक्षा स्तर उच्च, औसत और निम्न है अर्थात जनजाति विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तरमें महत्वपूर्ण अंतर है। अतः परिकल्पना 1 अस्वीकार्य की जाती है।

परिकल्पना 2– विज्ञान एवं कलावर्ग के जनजाति विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर समान है।

तालिका–2

विज्ञान एवं कलावर्ग के जनजाति विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का प्रतिशत

आकांक्षा स्तर	उच्च	औसत	निम्न	योग
प्रतिशत	21.67:	43.33	35:	100
योगकलावर्ग;150 छात्र	30	70	50	150
योगविज्ञानवर्ग;150 छात्र	35	60	55	150
योगविज्ञानवर्ग़ कलावर्ग छात्र	65	130	105	300

परिणामों की व्याख्या– प्रस्तुत अध्ययन में विज्ञानवर्ग एवं कलावर्ग के जनजाति विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का मापन करने के लिये 150 छात्र विज्ञान तथा 150 छात्र कला के विद्यार्थियों का चयन कर उनका प्रतिशत निकाला गया है। प्रदत्तों के विश्लेषणसे पता चलाकि 21.67 प्रतिशत; 65द्ध विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तरउच्च, 43.33 प्रतिशत; 130द्ध जनजातिविद्यार्थियों के आकांक्षा स्तरऔसततथा 35 प्रतिशत; 105द्ध जनजाति विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर निम्न है।

निष्कर्ष–परिणमों से प्राप्तप्रतिशत से पता चला है कि विज्ञानवर्ग एवं कलावर्ग के जनजाति विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर समान नही है। इनके आकांक्षा स्तरमें विभिन्नता देखने को मिली है। इन सभी विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर उच्च, औसत तथा निम्न है अर्थात विज्ञान का एवं कलावर्ग के जनजाति विद्यार्थियोंमें महत्वपूर्ण अन्तर है अतः परिकल्पना 2 अस्वीकार की जाती है।

सन्दर्भ पुस्तकें–

(i) गुप्ता एवंशर्मा (2019-20) समाजशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा P.P. 145-448.

(ii) महाजन एवं महाजन (2020) जनजाति समाज का समाजशास्त्र, विवके प्रकाशन, दिल्ली P.P. 106-143.

(iii) सिंह, जी0आर0पी0 (2013-2014) भारतीय सामाजिक व्यवस्था एवं समस्याएं, अग्रवाल पब्लिकेशन्स P.P. 106-143.

(iv) गुप्ता एवं शर्मा (2021) समाजशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा P.P. 105-120.

(v) मंगल एस0के0 (1990) शारीरिकशिक्षा और मनोविज्ञान की विधियां, प्रकाश ब्रदर्स लुधियाना P.P. 23-24